

মূর্ছনা ॥

সপ্ত-স্বরের ক্রমিক আরোহণ-অবরোহণকে মূর্ছনা বলে।^২ মূর্ছনা-পদ্ধতিতে সা, রি, গ, ম, প, ধ ও নি—এই সাতটিস্বরের এক-একবারে যে কোনো একটিকে প্রথম স্বর ধরে পর পর সাতটি স্বরের আরোহণ-অবরোহণ করলেই মূর্ছনার সৃষ্টি হয়। এইভাবে সাতটি মূর্ছনা পাওয়া সম্ভব। আমরা জেনেছি, গ্রাম ৩টি—ষড়্জ-গ্রাম, মধ্যম-গ্রাম ও গান্ধার-গ্রাম। স্মৃত্তরাং প্রতি-গ্রামে ৩টি করে মূর্ছনা পাওয়া সম্ভব বলে, ৩ গ্রামে ২১টি মূর্ছনার উদ্ভব হতে পারে। এগুলিকে বলে শুদ্ধ মূর্ছনা।

এখনকার দিনে আমরা কোনো রাগের পরিচয় দিতে গেলে বলি—এই রাগটি এই ঠাঁটের। তেমনি প্রাচীনকালে রাগ-পরিচয়ে বলা হতো—অমুক রাগটি অমুক গ্রামের অমুক মূর্ছনার অন্তর্গত। বর্তমান ঠাঁট-বাবস্থায় যেমন স্বরের সূক্ষ্ম-রূপ কোনোভাবেই বোঝা যায় না, মূর্ছনা পদ্ধতিতে কিন্তু রাগে ব্যবহৃত স্বরগুলির সূক্ষ্মতম রূপ সহজেই পাওয়া যায়। কারণ মূর্ছনার সঙ্গে স্বরের সূক্ষ্মতম ধনি বা শ্রুতির নিবিড় সম্পর্ক রয়েছে। **শ্রুতি ব্যতিত মূর্ছনা অর্থহীন হয়ে পড়ে।** যাইহোক, প্রাচীন এই মূর্ছনা-পদ্ধতিকে আধুনিক

সাঙ্গীতিক পরিভাষায় বলা হয় গ্রাম-মূর্ছনা। নিচে তিন গ্রামের মূর্ছনাগুলির নাম ও তাদের স্বর-কাঠামো (শ্রুতি-বিন্যাস সহ) দেখানো হচ্ছে।

স্থানাভাবে মূর্ছনার শুধু আরোহণ দেওয়া হলো, অবরোহণ একই রকম হবে।

॥ ষড়্জ-গ্রামীয় মূর্ছনা ॥

উত্তর মন্দ্রা	:	৪ সা	৩ রি	২ গ	৪ ম	৪ প	৩ ধ	২ নি।
রজনী	:	২ নি	৪ সা	৩ রি	২ গ	৪ ম	৪ প	৩ ধ।
উত্তরায়তা	:	৩ ধ	২ নি	৪ সা	৩ রি	২ গ	৪ ম	৪ প।
শুদ্ধ-ষড়্জী	:	৪ প	৩ ধ	২ নি	৪ সা	৩ রি	২ গ	৪ ম।
মৎসরীকৃতা	:	৪ ম	৪ প	৩ ধ	২ নি	৪ সা	৩ রি	২ গ।
অশ্বাক্রান্তা	:	২ গ	৪ ম	৪ প	৩ ধ	২ নি	৪ সা	৩ রি।
অভিরুদ্রগতা	:	৩ রি	২ গ	৪ ম	৪ প	৩ ধ	২ নি	৪ সা।

॥ मध्यम-ग्रामीय मूर्चना ॥

सौवीरी	:	४ म	३ प	४ ध	२ नि	४ सा	३ रि	२ ग
हरिणाश्व	:	२ ग	४ म	३ प	४ ध	२ नि	४ सा	३ रि
कलोपनता	:	३ रि	२ ग	४ म	३ प	४ ध	२ नि	४ सा
शुद्ध-मध्या	:	४ सा	३ रि	२ ग	४ म	३ प	४ ध	२ नि
मार्गी	:	२ नि	४ सा	३ रि	२ ग	४ म	३ प	४ ध
पौरवी	:	४ ध	२ नि	४ सा	३ रि	२ ग	४ म	३ प
हृद्यका	:	३ प	४ ध	२ नि	४ सा	३ रि	२ ग	४ म

॥ गान्धार-ग्रामीय मूर्चना ॥

नन्दा	:	४ ग	३ म	३ प	३ ध	४ नि	३ सा	२ रि
विशाला	:	२ रि	४ ग	३ म	३ प	३ ध	४ नि	३ सा
श्रुमूषी	:	३ सा	२ रि	४ ग	३ म	३ प	३ ध	४ नि
विचित्रा	:	४ नि	३ सा	२ रि	४ ग	३ म	३ प	३ ध
रोहिणी	:	३ ध	४ नि	३ सा	२ रि	४ ग	३ म	३ प

सुखा . : ३ प ३ ध ४ नि ३ सा २ रि ४ ग ३ म

आलापा : ३ म ३ प ३ ध ४ नि ३ सा २ रि ४ ग

तिनटि ग्रामेर २१टि शुद्ध मूर्चनार स्वरुप **वर्तमान स्वरेर दृष्टि**ते उपलब्धि भूव सहज्जेई करी येते पारे । ए व्यापारे नियम हपो, यथन ये मूर्चनाटिके आधुनिक स्वरानलीते रूपान्तरित करते हवे तथन सेई मूर्चनार प्रथम स्वरटिके 'सा' धरते हवे । तारपरु ग्राम अहसारे स्वरगुणिर श्रुत्यान्तरके सेण्ट्स-ए अथवा सेकेण्ड प्रति कम्पन-संख्यां रूपान्तरित करे निते हय । सेण्ट्स डिसेव सामान्य स्थूल हलेण्ड २/१ सेण्ट्स-एर तका कथनोई साधारण मानुषेर काने धरा पड़े ना एवं वायुहारिक मद्गीतेण्ड कोनो हेरकेण्ड घटे ना ।